International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं उसके आयामों का लिंग के संदर्भ में अध्ययन

डॉ शान्ति तेजवानी[1], बबीता दत्त[2]

[1]प्राचार्य, श्री वैष्णव कॉलेज ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग, इंदौर
[2]शोधार्थी, शिक्षा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

सारांश– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों का लिंग के संदर्भ में अध्ययन करना था। उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं, इस अवस्था में शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सौन्दर्यात्मक, एवं संवेगात्मक विकास चरम स्थिति में होता है, जो कि बालक एवं बालिकाओं में अलग–अलग होता है जिसके कारण हो सकता है कि उनके मूल्यों में परिवर्तन भी अलग–अलग हों। इसी संदर्भ में सिंग (2007), चार्ल्स एवं पारिख (2017) एवं वीनम (2017) ने क्रमशः विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं एवं शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के विभिन्न प्रकार के मूल्यों यथा सैद्धांतिक, धार्मिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों के संदर्भ में अलग–अलग परिणाम पाये गए। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि से इन्दौर के तीन विद्यालयों से 135 विद्यार्थियों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु ओझा एवं भार्गव द्वारा निर्मित स्टडी ऑफ वेल्यू टेस्ट का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों में सैद्धांतिक मूल्य एवं आर्थिक मूल्य एवं छात्राओं की तुलना सार्थक रूप से उच्च पाये गये, जबकि धार्मिक मूल्य छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च पाये गये। इसके अतिरिक्त अन्य मूल्यों सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक एवं कुल मूल्यों सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों का लिंग के संदर्भ में अध्ययन करना था। उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते है एवं विद्यार्थियों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में यह अवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। किशोरावस्था को संघर्ष एवं तूफान की अवस्था कहा जाता है क्योंकि इस अवस्था में बाल्यावस्था में अर्जित स्थिरता पुनः अस्थिरता में बदलने लगती है, इस अवस्था में व्यक्ति का विकास सभी दिशाओं में अर्थात् शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास अन्य सभी अवस्थाओं की अपेक्षा अत्यधिक तीव्र गति से होता है। यह अवस्था व्यक्तित्व के विकास की जटिल अवस्था होती है। अतः इस अवस्था में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अच्छा व्यक्तित्व विकास मानव के द्वारा अर्जित मूल्यों पर निर्भर होता है, एवं उचित अर्जित मूल्यों से वह आत्मविश्वासी हो सकता है तथा समाज में समायोजित हो सकता है। मूल्य मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं। वर्तमान समय में

विद्यार्थियों के रहन सहन, भौतिक सुख सुविधाओं में परिवर्तन होते दिखाई देते हैं, जिसके कारण मूल्यों में भिन्नता उत्पन्न होती है। ये परिवर्तन छात्र एवं छात्राओं में भिन्न–भिन्न होते हैं। श्रेष्ठ समाज एवं विकसित देश के निर्माण के लिए छात्र–छात्राओं में संतुलित समायोजित, आत्मविश्वासी व्यक्तित्व होना अत्यंत आवश्यक है, जिसके लिए जीवन मूल्यों का होना अति आवश्यक है।

मूल्य

मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण गुण का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनुष्य जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है और सीखने से अनुभव बढ़ते हैं। सीखते–सीखते जब वह परिपक्व हो जाता है तो उसे ऐसे अनुभव हो जाते हैं जो अनुभव उनके व्यवहार को मार्गदर्शन करते हैं, उन्हें निर्देशन देते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए, उसके लिए आदर्श क्या हैं? इन्हीं आदर्शों को मूल्य कहते हैं। इस प्रकार मूल्य किसी स्थिति का वह गुण है जो समालोचना या वरीयता प्रकट करते हैं। यह एक आदर्श है, जिसे पूर्ण करने हेतु आजीवन प्रयास करते हैं। वस्तुतः मूल्य प्रत्येक व्यक्ति, घटना, क्रिया एवं विचार को अर्थ एवं सार्थकता प्रदान करते हैं। ''मूल्य'' एक प्रकार का मानक हैं। मनुष्य किसी वस्तु क्रिया, विचार को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करता हैं, कि वह इसे अपनाए या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में, निर्णयात्मक ढंग से आते हैं, तो वह मूल्य कहलाते हैं।'' मूल्य चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं। मूल्य एक प्रकार के मानक होते हैं। किशोरावस्था में बालक किसी क्रिया विचार या किसी वस्तु को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करते है कि वह उसे अपनाए या त्याग दें। जब ऐसे विचार उनके मन में निर्णयात्मक ढंग से आते हैं तो वे मूल्य कहलाते हैं। किशोरावस्था के विद्यार्थी इन्हीं मूल्यों को आधार बनाकर अपनी जीवन शैली का निर्माण करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं। मूल्यों के अंर्तगत मनुष्य की अवधारणाएँ, विचार, विश्वास, आस्था, निष्ठा आदि समाहित होते हैं। जिसके आधार पर ही बालकों का नैतिक, सामाजिक, संवेगात्मक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है।

मनोवैज्ञानिक, मूल्यों को मनुष्य की रूचियों, अभिवृत्तियों के रूप में लेते हैं। फ्लिंक महोदय के अनुसार हम जिन मापदण्डों को पंसद करते हैं और महत्व देते हैं और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं वे ही हमारे लिए मूल्य होते हैं। उनके शब्दों में – मूल्य मानक रूपी मानदण्ड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से किसी एक का चयन करते हैं। पर्सी के अनुसार मूल्य किसी व्यक्ति के लिए रूचि का एक ऐसा विषय है, जिसकी उत्पत्ति विषय तथा रूचि के बीच विशिष्ट संबंधो से होती हैं। ऑलपोर्ट (1969) ने मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''मूल्य एक मानव विश्वास है, जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।'' गुड (1959) के अनुसार – मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, एवं सौंदर्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है, जो परामर्श के रूप में संदर्भित करने में विश्वास की आंतरिक प्रणाली के निर्णय में व्यक्ति की सुरक्षा या सहायता कर सकता है।

विभिन्न परिभाषाओं को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि किसी समाज के वे विश्वास, आदर्श, सिद्धांत, नैतिक नियम और व्यवहार, एवं मानदण्ड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्व देते हैं और जिनसे इनका व्यवहार

निर्देशित एवं नियंत्रित होता है, वे उस समाज एवं व्यक्तियों के मूल्य होते हैं। ये आचरण संहिता होते हैं, ये अच्छे गुण होते हैं जिसे व्यवहार में लाकर व्यक्ति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं, जीवन की पद्धति को बनाते हैं एवं अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं।

औचित्य

उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं, इस अवस्था में शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सौन्दर्यात्मक, एवं संवेगात्मक विकास चरम स्थिति में होता है, जो कि बालक एवं बालिकाओं में अलग–अलग होता है। बालक–बालिकाओं के सभी प्रकार के विकास में अंतर होता है तो उनके मूल्य भी भिन्न हो सकते हैं। मूल्य चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मूल्यों का किशोरो के व्यवहार एवं व्यक्तित्व से अत्यधिक निकट का संबंध होता है। अतः यह जानना जरूरी है कि क्या बालक एवं बालिकाओं के मूल्यों में समानता होती है या भिन्नता होती है। इसी संदर्भ में सिंग (2007) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों पर लिंग का प्रभाव पाया गया जबकि उनके सांस्कृतिक मूल्यों पर उनके लिंग के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया। चार्ल्स एवं पारिख (2017) ने लिंग के संबंध में उनके आर्थिक मूल्यों, पावर मूल्यों तथा स्वास्थ्य मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। जिसमें छात्राओं के आर्थिक मूल्य बेहतर पाए गए जबकि छात्रों द्वारा पावर मूल्य एवं स्वास्थ्य मूल्यों का चयन किया गया। वीनम (2017) ने विद्यालय के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया जबकि आर्थिक मूल्य, सौंदर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं राजनीतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। उपरोक्त सभी पूर्व शोधों के परिणामों में असंगतता के कारण शोधार्थी द्वारा "उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों का लिंग के संदर्भ में अध्ययन" शीर्षक का चयन किया गया।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्नांकित था–

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का लिंग के संदर्भ में अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाषा

मूल्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मूल्यों को ओझा एवं भार्गव द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत स्टडी ऑफ वेल्यू टेस्ट से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों के रूप में परिभाषित किया गया है। उनके अनुसार मूल्य के अंतर्गत मूल्य के छः आयामों यथा सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक को सम्मिलित किया गया है।

उद्‌देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्‌देश्य हैं –

1. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के माध्य फलांकों की तुलना करना।
2. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के क्रमशः सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के माध्य फलांकों की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्न परिकल्पनाएँ हैं–

1. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सैद्धांतिक मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्यों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण प्रकार का है। अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा इन्दौर के तीन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया, जो कि सहशिक्षण विद्यालय थे। तीनों विद्यालयों के 135 विद्यार्थियों का चयन प्रदत्त संकलन हेतु किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु ओझा एवं भार्गव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत स्टडी ऑफ वेल्यू टेस्ट का प्रयोग किया गया। जिसके द्वारा छः प्रकार के मूल्यों यथा सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक, एवं धार्मिक मूल्यों में वर्गीकृत है। यह स्प्रेंजर के टाइप सिद्धांत के आधार पर विकसित है। इस परीक्षण

के दो भाग है – भाग एक में 30 प्रश्न दो वैकल्पिक उत्तर के साथ दिये हैं एवं भाग दो में 15 प्रश्न चार वैकल्पिक उत्तर के साथ दिए हैं। इस प्रकार कुल 45 प्रश्नों के 120 वैकल्पिक उत्तर दिए गए हैं। मोटे तौर पर प्रत्येक वैकल्पिक उत्तर छः तरह के मूल्यों को निर्देशित करता है। भाग–1 के प्रत्येक उत्तर के लिए 1.5 अंक निर्धारित है, अ एवं ब दोनों विकल्पों हेतु 3 अंक निर्धारित है। भाग–2 में चारों विकल्पों के कुल 10 अंक हैं जिसमें से एक विकल्प के 2.5 अंक निर्धारित है। विभिन्न मूल्यों के फलांकों का योग 240 है।

प्रदत्त संकलन विधि

सर्वप्रथम इन्दौर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों की सूची से तीन विद्यालयों का चयन किया गया। तीनों विद्यालयों के प्राचार्यों को शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया एवं कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों से प्रदत्त संकलन हेतु अनुमति प्राप्त की गयी। तत्पश्चात् विद्यार्थियों से तारतम्य स्थापित कर उन्हें गया। तत्पश्चात् मूल्य परीक्षण से संबंधित प्रदत्तों के संग्रहण हेतु डॉ. आर. के. ओझा एवं डॉ. महेश भार्गव के स्टडी ऑफ वेल्यू टेस्ट से संबंधित निर्देश विद्यार्थियों को दिए गये एवं मूल्य परीक्षण को विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। तत्पश्चात् एकत्रित करके उसकी गणना की गयी।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए स्वतंत्र टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। जिन्हें तालिका 1.0 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1.0

छात्र एवं छात्राओं के मूल्य एवं उनके आयामों के माध्य, मानक विचलन एवं टी के मान

चर	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
मूल्य	छात्रायें	71	192.49	6.60	1.558	0.122
	छात्र	64	193.80	6.95		
सैद्धांतिक मूल्य	छात्रायें	71	31.90	3.43	2.612	0.010
	छात्र	64	33.45	3.46		
आर्थिक मूल्य	छात्रायें	71	32.34	2.88	2.111	0.037
	छात्र	64	33.44	3.14		
सौन्दर्यात्मक मूल्य	छात्रायें	71	32.22	3.79	1.801	0.074
	छात्र	64	31.00	4.08		
सामाजिक मूल्य	छात्रायें	71	32.50	3.09	0.801	0.424
	छात्र	64	32.94	3.14		
राजनीतिक मूल्य	छात्रायें	71	32.05	3.45	1.953	0.053
	छात्र	64	33.16	3.05		

धार्मिक मूल्य	छात्रायें	71	31.46	3.60	2.560	0.012
	छात्र	64	29.81	3.91		

तालिका से विदित होता है कि मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 1.558 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में मूल्य समान स्तर के पाये गये।

तालिका से यह भी विदित होता है कि सैद्धांतिक मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 2.612 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के सैद्धांतिक मूल्यों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है। उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्रों के सैद्धांतिक मूल्य के माध्य फलांक (33.45) छात्राओं के माध्य फलांकों (31.90) की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाये गये।

तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि आर्थिक मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 2.111 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक मूल्यों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है। उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्रों के आर्थिक मूल्य के माध्य फलांक (33.44) छात्राओं के माध्य फलांकों (32.34) की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाये गये।

तालिका से विदित होता है कि सौन्दर्यात्मक मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 1.801 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्यों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में सौन्दर्यात्मक मूल्य समान स्तर के पाये गये।

तालिका से विदित होता है कि सामाजिक मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 0.801 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक मूल्य समान स्तर के पाये गये।

तालिका से विदित होता है कि राजनीतिक मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 1.953 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक मूल्यों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में राजनीतिक मूल्य समान स्तर के पाये गये।

तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि धार्मिक मूल्यों के लिये छात्र–छात्राओं के टी का मान 2.560 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्यों के माध्य

फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है। उच्चत्तर माध्यमिक स्तर की छात्राओं के धार्मिक मूल्य के माध्य फलांक (31.46) छात्रों के माध्य फलांकों (29.81) की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाये गये।

परिणाम

1. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में मूल्य समान स्तर के पाये गये।
2. छात्रों के सैद्धांतिक मूल्य छात्राओं की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाये गये।
3. छात्रों के आर्थिक मूल्य छात्राओं के की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाये गये।
4. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में सौन्दर्यात्मक मूल्य समान स्तर के पाये गये।
5. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक मूल्य समान स्तर के पाये गये।
6. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में राजनीतिक मूल्य समान स्तर के पाये जाते हैं।
7. उच्चत्तर माध्यमिक स्तर की छात्राओं के धार्मिक मूल्य छात्रों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाये गये।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों में सैद्धांतिक मूल्य एवं आर्थिक मूल्य एवं छात्राओं की तुलना सार्थक रूप से उच्च पाये गये, जबकि धार्मिक मूल्य छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च पाये गये। इसके अतिरिक्त अन्य मूल्यों सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक एवं कुल मूल्यों सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

इन्दौरिया, जी. (2014). *शेखावाटी क्षेत्र की कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन* (अप्रकाशित पी–एच.डी., शिक्षाद्ध शोध प्रबंध, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय)।

जैन, ए. (2018). *इन्दौर शहर के माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन* (एम. एड. अप्रकाशित लघु शोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय)।

जैश्री. (2008). मूल्य शिक्षण. अंश पब्लिशिंग हाउस.

मंगल, एस.के. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. प्रेन्टीस हॉल ऑफ इंडिया.

पाण्डेय तथा मिश्र, (2004–05). मूल्य शिक्षण. विनोद पुस्तक मंदिर.

शर्मा, बी. एल. एवं माहेश्वरी, बी.के. (2001). पर्यावरण और मानव मूल्यों के लिए शिक्षा. आर. लाल बुक डिपो.

सिंह, एम. (2011). *बी. एड. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभियोग्यता, व्यवसायिक, रूचि एवं शिक्षक मूल्यों का लिंग व संकाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन* (अप्रकाशित एम.एड. शिक्षा, लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय)।

सुनीता, जी. (2017). *शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत मूल्य, सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन* (एम.एड. लघु शोध, शिक्षा संस्था उत्कृष्टता केन्द्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय)।

संगीत, सिंह (2009). *पूर्वी उत्तरप्रदेश में इण्टरमीडिएट एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का नैतिक ह्रास के प्रति मत एवं उन्हें दूर करने में नैतिक शिक्षा तथा युवकों की भूमिका* (पी–एच.डी. थिसिस, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ)।

तिवारी, आर. (2016). मूल्य शिक्षा, राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.

Archana, M. (2016). A study of values of secondary school students in relation to their socio-economic status and modernization. *Learning community*. 7(3), 203-216. http://ndpublisher.in/admin/issues/LCV 7N3a.pdf

Charles A. & Parikh, J. (2017). Influence of Gender on the personal values of higher secondary students, l4 (3), DOI : 10.25215/0403.312

Jose, C. C. (2012). *A study of work values of secondary school teacers in relation to organizational culture*. 75-92. http://ncert.nic.in/pdf/ publication/journals and periodicals/journal of India education.

Nisha, N. (1990). *A study of adolescent alienation in relation to Personality, Values, Adjustment, Self Esteem, Locus of Control and Academic Achievement* [Ph.D. Thesis, Punjab University]. Shodhganga http:// hdl.handle.net./10603/83309

Patel, M. K. (2018). *A study of value pattern of B.Ed. students in relation to certain variables* [Ph.D. Thesis, Sardar Patel University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/241636

Rajitha, M. L. (2007). *Values of secondary school students in relation to their personality traits* [Ph.D. Thesis, Manonmaniam University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/65715

Ramani, D. J. (2018). *Indian three dimensions Personality, Moral Value and Caste Prejudice among people of different category* [Ph.D. Thesis, Saurashtra University]. Shodhganga http://hdl.handle.net. /10603/218154

Rogers, V. (2019). *Comparative Study of Personality Traits and values of secondary school students studying in Missionary and Non-Missionary Schools* [Ph.D. Thesis, Integral University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/272503

Ruhela, S. P. (1986). Human values and education. sterling Publisher.

Sarmah, C. (2012). *Personality Patterns, Value Preferences and Academic Achievement of the secondary school students among deoris in Assam* [Ph.D. Thesis, Assam University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/ 10603/40825